हिन्दी की विकास-यात्रा

- मनोज कुमार सिंह
प्रबंधक(आई.ई.)
एन.सी.एल., सिंगरौली(म.प्र.)

1.0 प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज में रहकर वह अपनी बातें दूसरों तक पहुँचाना चाहता है और दूसरों की बातें स्वयं समझना चाहता है । मानव अपनी बातें दूसरों तक सम्प्रेषित करने के लिए कभी इशारों का सहारा लेता है तो कभी अस्पष्ट ध्वनियों का सहारा लेता है । किन्तु, मनुष्य सम्प्रेषण के लिए सबसे अधिक जिस माध्यम का सहारा लेता है, वह है भाषा । भाषा ध्वनि-प्रतीकों की ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से किसी समाज के सदस्य परस्पर भावों और विचारों को बोलकर या लिखकर अदान-प्रदान करते हैं ।

सभ्यता के विकास के विकास के साथ-साथ मनुष्य के लिए अपने भावों एवं विचारों को स्थायित्व देना, दूर-दूर स्थित लोगों से सम्पर्क बनाए रखना तथा संदेशों के आदान-प्रदान के लिए मौखिक भाषा से काम चल पाना असंभव हो गया । अतएव मौखिक ध्वनि संकेतों को लिखित रूप की आवश्यकता महसूस की गई । यह आवश्यकता ही लिपि के विकास का कारण बनी । मौखिक भाषा को स्थाई रूप देने के लिए भाषा के लिखित रूप का विकास हुआ । संसार की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं । देवनागरी, रोमन, गुरमुखी, फारसी और रूसी विश्व की प्रमुख लिपियाँ हैं । हिन्दी, मराठी, नेपाली, और संस्कृत भाषायें देवनागरी लिपि में लिखी जाती है । यों तो हर भाषा की अपनी लिपि होती है, किन्तु कोई भी भाषा किसी भी लिपि में लिखी जा सकती है । विश्व की भाषाओं और लिपियों का विवरण निम्नलिखित हैं :

क्र. सं.	भाषा	लिपि
1.	हिन्दी	देवनागरी
2.	संस्कृत	देवनागरी
3.	अंग्रेजी, फ्रेंच, पोलिश, स्पेनिश	रोमन
4.	पंजाबी	गुरमुखी
5.	उर्दू, अरबी, फारसी	फारसी
6.	रूसी, बुल्गेरीयन	रूसी

2.0 प्राचीन भारतीय भाषायें :

समय के साथ-साथ एक भाषा बोलने वाली कई जातियाँ विश्व के अलग-अलग भागों में जाकर बस गई जिससे उनकी भाषाओं में परिवर्तन आता चला गया और नई भाषायें बनती चली गई । विश्व की लगभग 2,800 भाषाओं को निम्नलिखित 12 मुख्य भाषा परिवारों - भारत-यूरोपीय, द्रविड़, आग्नेय, चीनी, यूराल-अल्टाइक, बाँटू, सेमेटिक, हेमेटिक, अमेरिकी(रेड इण्डियन), काकेशस, सूडानी और बुशमैन में वर्गीकृत किया जा सकता । भारत में संसार की निम्मलिखित चार भाषा परिवारों की अनेक भाषायें बोली जाती हैं :

- भारत-यूरोपीय
- द्रविड़
- तिब्बत-बर्मी
- आग्नेय

भारत-यूरोपीय भाषा परिवार विश्व का एक अत्यंत विशाल भाषा परिवार है । इसकी भारतीय शाखा को भारतीय आर्य भाषा परिवार के नाम से जाना जाता है । हिन्दी तथा उत्तर भारत की अधिकांश भाषायें आर्य परिवार की भाषायें मानी जाती हैं । इनका मूल स्रोत संस्कृत है । ग्रीक, ईरानी, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी आदि अनेक भाषायें भी उसी मूल भाषा से विकसित हुई हैं जिससे संस्कृत का विकास हुआ । भारत में एक दूसरा भाषा परिवार द्रविड़ कुल का है; जिसकी मुख्य भाषायें हैं - तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ । इन चार भाषाओं में भी संस्कृत के शब्द प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं । भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है । वैदिक संस्कृत से हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का विकास हुआ । वैदिक संस्कृत से आधुनिक युग की भारतीय भाषाओं तक आने में इसे निम्न चार चरणों से होकर गुजरना पड़ा :

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

- वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. से 800 ई.पू.) :वैदिक संस्कृत में चार वेदों की रचना हुई ।
- लैकिक संस्कृत (800 ई.पू. से 500 ई.पू.) :लौकिक संस्कृत में रामायण, महाभारत आदि महाकाव्य की रचना हुई ।
- पालि-प्राकृत (500 ई.पू. से 500 ई. तक):पालि-प्राकृत लौकिक संस्कृत का परिवर्तित रूप है । इसमें बौद्ध साहित्य की रचना हुई ।
- अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई. तक) :अपभ्रंश प्राकृत का परिवर्तित रूप है ।

इस विकास क्रम से स्पष्ट है कि द्रविड़ परिवार की तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ को छोडक़र भारत की सभी भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है ।

3.0 देवनागरी लिपि का विकास :

देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है । ब्राह्मी वह प्राचीन लिपि है जिससे हिन्दी, बंगला, गुजराती आदि भाषाओं की लिपि का विकास हुआ । देवनागरी लिपि में संसार की लगभग सभी भाषायें लिखी जा सकती है । यह लिपि बहुत ही वैज्ञानिक लिपि है । इस लिपि में बाँई से दाँई ओर को लिखी जाती है । भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियाँ बाँई से दाँई ओर लिखी जाती है । केवल फारसी लिपि, जिसमें उर्दू भाषा लिखी जाती है, दाँई से बाँई ओर को लिखी जाती है । विद्वानों की मान्यता है कि हमारी देवनागरी लिपि किसी-न-किसी रूप में ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है, लेकिन देवनागरी का विकास ब्राह्मी से एकदम सीधा न होकर उत्तर शैली की कुटिल, शारदा और प्राचीन नागरी के रूप में होता हुआ वर्तमान देवनागरी लिपि तक आ पहुँचा । प्राचीन नागरी के दो रूप विकसित हुए - पश्चिमी और पूर्वी । पूर्वी रूप में कैथी, मैथिली, नेवारी, उड़िया, बंगला, असमिया आदि लिपि का विकास हुआ तो उसके पश्चिमी रूप से गुजराती, मराठी, महाजनी, राजस्थानी,
महाराष्ट्री तथा देवनागरी लिपियाँ विकसित हुई । देवनागरी लिपि का विकास निम्नलिखित चार्ट से आसानी

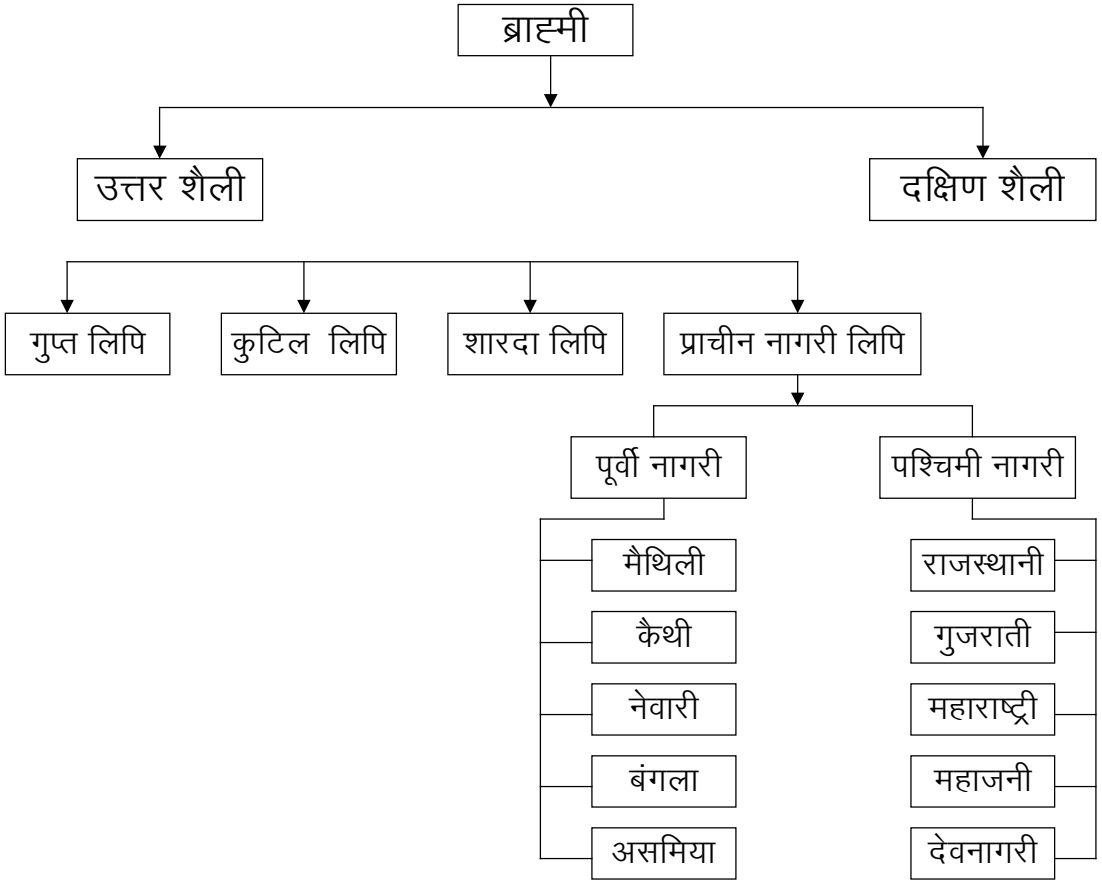

से समझा जा सकता है :

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

4.0 आधुनिक भारतीय भाषायें :

आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ जिसका प्रचलन एवं प्रयोग 500 ई. से 1000 ई. के बीच हुआ । देश में उस समय अपभ्रंश के शौरसेनी, मगधी, महाराष्ट्री आदि अनेक रूप प्रचलित थे । इन्हीं से विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं की धारा निकली है । अपभ्रंश पालि-प्राकृत से और पालि-प्राकृत वैदिक संस्कृत से विकसित हुई है ।

आर्य परिवार की आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी, सिंधी, गुजराती, मराठी, बांग्ला, उड़िया और असमिया प्रमुख है । संस्कृत से विकसित होने के कारण इन भाषाओं में न केवल संस्कृत के शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, बल्कि व्याकरण के रूप भी इनमें लगभग समान है । यही कारण है कि भारतीय आर्य परिवार की इन भाषाओं को परस्पर समझने या सीखने में कोई कठिनाई नहीं होती ।

मुगल काल में हिन्दी भाषा पर प्रभाव डालने वाली दो प्रमुख भाषायें अरबी और फारसी थीं जिन्होंने हिन्दी शब्द भण्डार को अत्यधिक प्रभावित किया । इसी प्रकार आजकल हिन्दी के शब्द-भण्डार तथा वाक्य रचना को गहराई से प्रभावित करने वाली दूसरी भाषा है अंग्रेजी जिसने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

5.0 हिन्दी भाषा का विकास :

जिस रूप में आज हिन्दी भाषा बोली और समझी जाती है वह खड़ी बोली का ही साहित्यिक रूप है जिसका विकास मुख्यत: 19वीं शताब्दी में हुआ । खड़ी बोली का प्राचीन रूप 10वीं शताब्दी से मिलता है लेकिन 14वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अमीर खुसरो ने पहली बार खड़ी बोली हिन्दी में पहेलियाँ और मुकरियाँ रची । मध्यकाल तक खड़ी बोली मुख्यत: बोलचाल की भाषा के रूप में व्यापक रूप से प्रयुक्त होती रही । इसका

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

कारण यह था कि उस युग में ब्रज-भाषा और अवधी काव्य की भाषा थी । ब्रजभाषा को सूरदास ने, अवधी को तुलसीदास ने और मैथिली को विद्यापति ने चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया । राजदरबार में फारसी राजकाज की भाषा थी । अत: खड़ी बोली इन क्षेत्रों में उपेक्षित-सी रही । लेकिन समस्त उत्तर भारत में जनसम्पर्क की यही एकमात्र भाषा थी ।

हिन्दी गद्य को निखारने तथा इसे परिष्कृत करने में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, मैथिलीशरण गुप्त आदि विद्वानों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । जन समुदायों को सम्बोधित करने के लिए गाँधी, तिलक, दयानंद सरस्वति और सुभाष चंद्र बोस आदि असंख्य नेताओं ने इसी हिन्दी का प्रयोग किया । हिन्दी भाषा के विविध रूपों में आजकल खड़ी बोली ही सबसे अधिक प्रचलित है जिसका विकास पश्चिमी हिन्दी से हुआ है ।

6.0 हिन्दी भाषा का रूप :

- **राजभाषा :** 14 सितम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया । संविधान के अनुछेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है । उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उतराखण्ड, छत्तीसगढ़ और दिल्ली राज्यों की राजभाषा हिन्दी ही है । इन सभी प्रदेशों में हिन्दी की अनेक बोलियाँ बोली जाती है । पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र राज्यों और अण्डमान एवं निकोबार केन्द्र शासित प्रदेश ने हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप मान्यता दी है ।
- **सम्पर्क भाषा :** सम्पर्क भाषा के रूप में बोलचाल में हिन्दी का प्रयोग भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में होता है । देश के अधिकांश क्षेत्रों में इसके अध्ययन की व्यवस्था है । यह साहित्य के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा-माध्यम तथा तकनीकी कार्यों की भाषा के रूप में विकसित हो रही है । पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध सकने में सर्वाधिक सक्षम भाषा हिन्दी है ।

- **अंतर्राष्ट्रीय भाषा :** राष्ट्रीय ही नहीं, हिन्दी आज अपना अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप भी स्थापित कर चुकी है । विश्व के अनेक देशों जैसे फिजी, मारीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गुयाना, कनाडा, इंग्लैण्ड, नेपाल आदि में हिन्दी बोली जाती है ।
- **प्रयोजनमूलक भाषा :** कार्यालयों, बैंकों, विभिन्न प्रबंधन संस्थानों, विधि, लोकसंचार, कंप्यूटर, इंजीनियरी आदि कार्य क्षेत्रों के संदर्भ में प्रयुक्त विशिष्ट प्रयोजन की प्रयोजनमूलक हिन्दी है । इस हिन्दी का प्रयोग उस कार्यक्षेत्र से संबंधित व्यक्ति करते हैं । इसकी अपनी शब्दावली होती है । यह अलंकारहीन होती है । ऐसी हिन्दी प्राय: तकनीकी होती है तथा औपचारिक शैली में लिखी जाती है । प्रयोजनमूल हिन्दी भाषा को संचार-माध्यम, कंप्यूटर, सर्वेक्षण-कार्य और कार्यालीन-कार्य में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

7.0 हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ :

विशाल भूभाग की भाषा होने के कारण हिन्दी की अनेक बोलियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है । पश्चिम में हिन्दी की हरियाणवी, खड़ी-बोली, ब्रज-भाषा, बुंदेली और राजस्थानी प्रमुख हैं जबकि पूर्व में अवधी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी और मैथिली प्रमुख है। उत्तर में गढ़वाली एवं कुमाऊँनी और दक्षिण में दक्खनी हिन्दी उल्लेखनीय हैं । हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में इन सभी बोलियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । व्यापक रूप से हिन्दी के पाँच रूप माने जाते हैं :

क्र.सं.	हिन्दी का रूप	बोली	बोली क्षेत्र
1.	पश्चिमी हिन्दी	बुंदेली	छतरपुर (मध्य प्रदेश)
		कन्नौजी	कन्नौज (उत्तर प्रदेश)
		ब्रजभाषा	मथुरा, आगरा (उत्तर प्रदेश)
		खड़ी बोली	दिल्ली व मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर (उ.प्र.)
		हरियाणवी	रोहतक (हरियाणा)
2.	पूर्वी हिन्दी	अवधी	लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

		बघेली	रीवा (मध्य प्रदेश)
		छत्तीसगढ़ी	रायपुर (छत्तीसगढ़)
3.	बिहारी हिन्दी	मगही	गया (बिहार)
		मैथिली	दरभंगा (बिहार)
		भोजपुरी	बलिया (उत्तर प्रदेश)
4.	पहाड़ी हिन्दी	मंडियाली	कुल्लू (हिमाचल प्रदेश)
		गढ़वाली	टिहरी, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
		कुमाँऊनी	अल्मोड़ा, नैनीताल (उत्तराखण्ड)
5.	राजस्थानी हिन्दी	जयपुरी	जयपुर (राजस्थान)
		निमाड़ी	खँण्डवा (मध्य प्रदेश)
		मालवी	उज्जैन (मध्य प्रदेश)
		मारवाड़ी	जोधपुर, बीकानेर (राजस्थान)
		भीली	राजस्थान, म.प्र. और गुजरात के सीमावर्ती क्षेत्र

हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में हिन्दी की सभी बोलियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । इन बोलियों में से कुछ में उच्च कोटि का साहित्य रचा गया है । मैथिली में मैथिल कोकिल विद्यापति की अमर काव्यकृति पदावली रची गई, अवधी में हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ काव्यग्रंथ रामचरितमानस की रचना तुलसीदास ने तथा पद्मावत की रचना मुसलमान कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने की । कृष्ण-काव्य का विशाल साहित्य मुख्यत: ब्रजभाषा में ही है । ब्रजभाषा में सूरदास, नंददास, रसखान, रहीम, केशव बिहारी, मतिराम, भूषण, पद्माकर जैसे श्रेष्ठ कवि हुए । सूरदास की सूरसागर ब्रजभाषा की अमर काव्यकृति है । राजस्थानी हिन्दी में मीराबाई ने श्रेष्ठ काव्य की रचना की । खड़ी बोली के प्रथम प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो थे । साकेत, प्रियप्रवास और कामायनी खड़ी बोली के प्रसिद्ध काव्य हैं । हिन्दी में अतुकांत महाकाव्य लिखने का श्रेय सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को है ।

8.0 निष्कर्ष :

हिन्दी एक सरल, व्यवहारिक एवं जीवंत भाषा है । इस भाषा में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है, अत: हिन्दी वैज्ञानिक भाषा है । इसके पास विपुल शब्द भण्डार है । संस्कृत के साथ-साथ इसने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि अन्य भाषाओं के हजारों शब्दों को ग्रहण किया है ।

आज हिन्दी देश के कोने-कोने में बोली जाती है । अहिन्दी भाषी भी टूटी-फूटी बोल और समझ सकता है । हिन्दी हिन्दुस्तान के एक विशाल भू-भाग की भाषा है । यह देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ यह अनेक राज्यों की राजभाषा भी है । यह आज समस्त भारत की सम्पर्क भाषा बन गई है । अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का विकास हो रहा है । सार्वजनिक स्थानों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है ।

जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में हिन्दी बोलने वालों का दूसरा स्थान है । विश्व के 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में आज हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है । भारत सरकार ने विश्व स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गुजरात के वर्द्धा में महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की है । छ: विश्व हिन्दी सम्मेलनों से शक्ति प्राप्त कर हिन्दी आज विश्व-भाषा और संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने की ओर अग्रसर है ।

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!